Shri Vindhyeshvari Chalisa

श्री विन्ध्येश्वरी चलीस

Document Information

Text title : shrii vindhyeshvarii chaaliisaa

File name : vindhya40.itx

Category : chAlisA, devii, pArvatI, devI

Location : doc_z_otherlang_hindi

Transliterated by : NA

Proofread by : NA

Description-comments : Devotional hymn to Hanuman, of 40 verses

Latest update : March 13, 2015

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 14, 2022

sanskritdocuments.org

Shri Vindhyeshvari Chalisa

श्री विन्ध्येश्वरी चलीस

दोह

नमो नमो विन्ध्येश्वरी नमो नमो जगदम्ब ।
सन्तजनों के कज में मँ करती नहीं विलम्ब ॥

जय जय जय विन्ध्यचल रनी । अदि शक्ति जग विदित भवनी ॥

सिंहवहिनी जै जग मत । जय जय जय त्रिभुवन सुखदत ॥

कष्ट निवरिनी जय जग देवी । जय जय जय जय असुरसुर सेवी ॥

महिम अमित अपर तुम्हरी । शेष सहस मुख वर्णत हरी ॥

दीनन के दुःख हरत भवनी । नहिं देख्यो तुम सम कोई दनी ॥

सब कर मनस पुरवत मत । महिम अमित जगत विख्यत ॥

जो जन ध्यन तुम्हरो लवै । सो तुरतहि वंछित फल पवै ॥

तू ही वैष्णवी तू ही रुद्रणी । तू ही शरद अरु ब्रह्मणी ॥

रम रधिक शम कली । तू ही मत सन्तन प्रतिपली ॥

उम मधवी चण्डी ज्वल । बेगि मोहि पर होहु दयल ॥

तू ही हिंगलज महरनी । तू ही शीतल अरु विज्ञनी ॥

दुर्ग दुर्ग विनशिनी मत । तू ही लक्ष्मी जग सुखदत ॥

तू ही जन्हवी अरु उत्रनी । हेमवती अम्बे निर्वनी ॥

अष्टभुजी वरहिनी देवी । करत विष्णु शिव जकर सेवी ॥

चोंसट्ठी देवी कल्यनी । गौरी मंगल सब गुण खनी ॥

पटन मुम्ब दन्त कुमरी । भद्रकली सुन विनय हमरी ॥

वज्रधरिणी शोक नशिनी । अयु रक्शिणी विन्ध्यवसिनी ॥

जय और विजय बैतली । मतु सुगन्ध अरु विकरली ।
नम अनन्त तुम्हर भवनी । बरनैं किमि मनुष अज्ञनी ॥
ज पर कृप मतु तव होई । तो वह करै चहै मन जोई ॥
कृप करहु मो पर महरनी । सिद्धि करिय अम्बे मम बनी ॥
जो नर धरै मतु कर ध्यन । तकर सद होय कल्यन ॥
विपत्ति तहि सपनेहु नहिं अवै । जो देवी कर जप करवै ॥
जो नर कहं ऋण होय अपर । सो नर पठ करै शत बर ॥
निश्चय ऋण मोचन होई जई । जो नर पठ करै मन लई ॥
अस्तुति जो नर पढ़े पढ़वे । य जग में सो बहु सुख पवै ॥
जको व्यधि सतवै भई । जप करत सब दूरि परई ॥
जो नर अति बन्दी महं होई । बर हजर पठ कर सोई ॥
निश्चय बन्दी ते छुटि जई । सत्य बचन मम मनहु भई ॥
ज पर जो कछु संकट होई । निश्चय देबिहि सुमिरै सोई ॥
जो नर पुत्र होय नहिं भई । सो नर य विधि करे उपई ॥
पंच वर्ष सो पठ करवै । नौरतर में विप्र जिमवै ॥
निश्चय होय प्रसन्न भवनी । पुत्र देहि तकहं गुण खनी ।
ध्वज नरियल अनि चढ़वै । विधि समेत पूजन करववै ॥
नित प्रति पठ करै मन लई । प्रेम सहित नहिं अन उपई ॥
यह श्री विन्ध्यचल चलीस । रंक पढ़त होवे अवनीस ॥
यह जनि अचरज मनहु भई । कृप दृष्टि तपर होई जई ॥
जय जय जय जगमतु भवनी । कृप करहु मो पर जन जनी ॥

अरती श्री विन्ध्येश्वरी जी की

सुन मेरी देवी पर्वत वसिनी तेर पर न पय ॥ टेक.॥
पन सुपरी ध्वज नरियल ले तरी भेंट चढ़य । सुन.।
सुव चोली तेरे अंग विरजे केसर तिलक लगय । सुन.।

नंगे पग अकबर अय सोने क छत्र चढय । सुन.।
उँचे उँचे पर्वत भयो दिवलो नीचे शहर बसय । सुन.।
कलियुग द्वपर त्रेत मध्ये कलियुग रज सबय । सुन.।
धूप दीप नैवेद्य अरती मोहन भोग लगय । सुन.।
ध्यनू भगत मैय तेरे गुण गवैं मनवंछित फल पय । सुन.।

॥ इति॥

Shri Vindhyeshvari Chalisa
pdf was typeset on January 14, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*